eISSN 3049-2610
RESEARCH STREAM
A Bi-Annual, Open Access Pear Reviewed International Journal
Volume 01, Issue 02, December 2024

प्रेमचंद के उपन्यासों में सामाजिक यथार्थ का चित्रण

डा0 पियंका रानी[1]
[1]सहायक प्रोफेसर हिन्दी, राजकीय महिला स्ना0 महाविद्यालय बिंदकी फतेहपुर उ0प्र0

Received: 20 Dec 2024 Accepted & Reviewed: 25 Dec 2024, Published: 31 Dec 2024

Abstract

प्रेमचंद हिंदी साहित्य के यथार्थवादी साहित्यकारों में अग्रणी माने जाते हैं। उनके उपन्यासों में सामाजिक यथार्थ का अत्यंत सजीव और गहन चित्रण मिलता है। उन्होंने भारतीय समाज की विषमताओं, जातिगत भेदभाव, ग्रामीण जीवन की समस्याओं, आर्थिक विषमता, नारी की स्थिति, किसानों की दुर्दशा, तथा तत्कालीन समाज की नैतिक व राजनीतिक विफलताओं को अपनी रचनाओं में उकेरा है। उनके उपन्यास केवल साहित्यिक कृतियाँ न होकर सामाजिक दस्तावेज़ भी हैं। यह शोधपत्र प्रेमचंद के प्रमुख उपन्यासों– गोदान, गबन, कर्मभूमि, सेवासदन, वरदान, निर्मला आदि के माध्यम से सामाजिक यथार्थ के विभिन्न पक्षों का विश्लेषण करता है। साथ ही, यह शोध इस बात को रेखांकित करता है कि प्रेमचंद का यथार्थ केवल वर्णनात्मक नहीं, बल्कि परिवर्तनकामी और उद्देश्यपरक भी है।

कीवर्ड्स– प्रेमचंद, सामाजिक यथार्थ, हिंदी उपन्यास, गोदान, गबन, कर्मभूमि, नारी समस्या, किसान जीवन, जातिवाद, ग्रामीण समाज, यथार्थवाद, साहित्य और समाज

Introduction

हिंदी साहित्य में प्रेमचंद का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। वे न केवल कथा साहित्य के युगप्रवर्तक हैं, बल्कि समाज के सजग प्रेक्षक भी हैं। प्रेमचंद ने जिस यथार्थ का चित्रण किया, वह केवल दृश्य यथार्थ नहीं था, बल्कि वह सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक तथा नैतिक यथार्थ का बहुआयामी परिप्रेक्ष्य था। उनके उपन्यासों में भारतीय समाज का वह चेहरा सामने आता है जो शोषण, अन्याय और पीड़ा से जूझ रहा है।

प्रेमचंद का साहित्य 'साहित्य समाज का दर्पण है' की उक्ति को चरितार्थ करता है। उन्होंने अपने समय के समाज को न केवल देखा, बल्कि उसकी गहरी पड़ताल की और साहित्य के माध्यम से समाज की विसंगतियों, कुरीतियों व विडंबनाओं को पाठकों के सामने रखा।

सामाजिक यथार्थ की अवधारणा

'सामाजिक यथार्थ' का अर्थ है समाज की यथास्थिति का तथ्यात्मक और निष्पक्ष चित्रण। यह न केवल समाज के बाह्य स्वरूप को दर्शाता है, बल्कि उसकी अंतरवस्तु जैसे मूल्य, नैतिकता, शक्ति–संबंध, वर्ग–संघर्ष आदि को भी उद्घाटित करता है।

प्रेमचंद के उपन्यासों में सामाजिक यथार्थ का चित्रण एक व्यापक दृष्टिकोण के साथ किया गया है, जिसमें निम्न वर्ग, दलित, स्त्री, किसान, मध्यवर्ग, धार्मिक पाखंड, और पूंजीवाद के प्रभाव जैसे विविध पहलुओं को स्थान मिला है।

ग्रामीण जीवन का यथार्थ (विशेषतः 'गोदान' में)

© RESEARCH STREAM JOURNAL, 2024

eISSN 3049-2610
RESEARCH STREAM
A Bi-Annual, Open Access Pear Reviewed International Journal
Volume 01, Issue 02, December 2024

प्रेमचंद का उपन्यास गोदान ग्रामीण जीवन के यथार्थ का उत्कृष्ट उदाहरण है। इसमें मुख्य पात्र होरी एक सामान्य किसान है जो अपने परिवार को पालने के लिए हर संभव संघर्ष करता है, लेकिन अंततः शोषण और विषमता की बलि चढ़ जाता है।

कृषि–आधारित जीवन की कठिनाइयाँ

जमींदारी प्रथा और शोषण

कर्ज, साहूकार, महाजन की भूमिका

ग्रामीण स्त्री की स्थिति – धनिया का सशक्त चित्रण

'गोदान' में प्रेमचंद ने दिखाया कि ग्रामीण भारत केवल भौगोलिक क्षेत्र नहीं, बल्कि एक सामाजिक संरचना है जहाँ निर्धनता और शोषण अंतर्निहित हैं।

नारी यथार्थ और सामाजिक स्थिति (निर्मला, सेवासदन)

प्रेमचंद के उपन्यासों में नारी पात्र केवल सहानुभूति की पात्र नहीं हैं, बल्कि वे उस सामाजिक संरचना का दर्पण हैं जो स्त्रियों को पराधीन बनाए रखती है।

निर्मला में बाल विवाह और दहेज प्रथा का मार्मिक चित्रण है।

सेवासदन में वेश्यावृत्ति और नारी मुक्ति का प्रश्न उठाया गया है।

इन रचनाओं में प्रेमचंद ने नारी जीवन के भीतर छिपी वेदना, असमानता, और संघर्ष को अत्यंत संवेदनशील ढंग से प्रस्तुत किया है।

मध्यवर्ग और नैतिक द्वंद्व (गबन, कर्मभूमि)

प्रेमचंद का मध्यवर्गीय पात्र एक ओर आदर्शवाद से प्रेरित होता है, तो दूसरी ओर आर्थिक कठिनाइयों और सामाजिक अपेक्षाओं के बीच फँसा होता है।

'गबन' में जीवन की भौतिक लालसा और नैतिकता के बीच संघर्ष को 'रमनाथ' के माध्यम से दर्शाया गया है।

'कर्मभूमि' में राजनीतिक चेतना और गांधीवादी आदर्शों की पड़ताल की गई है।

प्रेमचंद ने इस वर्ग के अंतर्द्वंद्व, आंतरिक संघर्ष और सामाजिक द्वैधता को बखूबी चित्रित किया है।

जातिवाद और सामाजिक भेदभाव

प्रेमचंद के उपन्यासों में जाति आधारित शोषण और सामाजिक भेदभाव का यथार्थ चित्रण विशेष रूप से उल्लेखनीय है। उन्होंने समाज में व्याप्त ब्राह्मणवादी वर्चस्व, अस्पृश्यता, और दलितों की उपेक्षा को बिना किसी लाग–लपेट के सामने रखा।

'कर्मभूमि' में अली और अमर जैसे पात्रों के माध्यम से प्रेमचंद ने धार्मिक–सामाजिक भेदभाव को मिटाने की आवश्यकता पर बल दिया है।

'गोदान' में गोबर और झुनिया की कथा सामाजिक बंधनों की आलोचना करती है।

© RESEARCH STREAM JOURNAL, 2024

eISSN 3049-2610
RESEARCH STREAM
A Bi-Annual, Open Access Pear Reviewed International Journal
Volume 01, Issue 02, December 2024

प्रेमचंद का दृष्टिकोण सुधारवादी है – वे दलितों को समाज की मुख्यधारा में लाना चाहते हैं, साथ ही ऊँची जातियों की मानसिकता में परिवर्तन की भी अपेक्षा रखते हैं।

उनका जातिवाद–विरोध केवल भावनात्मक नहीं, अपितु सामाजिक चेतना से युक्त है जो भारतीय समाज के यथार्थ से गहरे जुड़ा हुआ है।

धार्मिक पाखंड और सामाजिक नैतिकता

प्रेमचंद ने भारतीय समाज में धर्म के नाम पर हो रहे पाखंडों और उसके पीछे छिपे आर्थिक–राजनीतिक स्वार्थों का भी पर्दाफाश किया है।

'कर्मभूमि' में मंदिरों की आड़ में हो रहे भ्रष्टाचार और ब्राह्मणों की सत्ता का यथार्थ चित्रण मिलता है।

'सेवासदन' में धार्मिक नैतिकता और वेश्यावृत्ति के द्वंद्व के माध्यम से समाज की विडंबनाओं को दर्शाया गया है।

प्रेमचंद के पात्र धर्म को आस्था से अधिक एक सामाजिक संस्था के रूप में देखते हैं जो कभी–कभी शोषण का माध्यम बन जाती है। उनका साहित्य आस्तिक होते हुए भी अंधविश्वास–विरोधी है।

प्रेमचंद का यथार्थवाद बनाम रोमांटिक यथार्थ

प्रेमचंद से पूर्व हिंदी उपन्यासों में कल्पनाशीलता और आदर्शवाद की प्रधानता थी। लेकिन प्रेमचंद ने साहित्य में यथार्थ की एक नई परंपरा की शुरुआत की। उनका यथार्थवाद क्या केवल क्रूर सामाजिक चित्रण है?

नहीं, प्रेमचंद का यथार्थ परिवर्तनकामी है – वह केवल रोग नहीं दिखाता, समाधान की तलाश भी करता है।

उनके पात्र संपूर्ण समाज का प्रतिनिधित्व करते हैं – किसान, स्त्री, दलित, मध्यमवर्ग, युवा दृ सभी उनके साहित्य में जीवित हैं।

प्रेमचंद का यथार्थ न तो नीरस है और न ही केवल समस्या–केन्द्रित – उसमें संघर्ष, उम्मीद और मनुष्य की जिजीविषा भी समाहित है।

समकालीन प्रासंगिकता

प्रेमचंद का सामाजिक यथार्थ आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना उनके समय में था।

आज भी ग्रामीण भारत में किसानों की आत्महत्या, ऋण, और भूमि विवाद जारी हैं – 'गोदान' आज भी उतना ही प्रासंगिक है।

महिला सशक्तिकरण, लैंगिक असमानता, दहेज जैसी समस्याएँ अब भी मौजूद हैं – 'निर्मला' और 'सेवासदन' जैसे उपन्यास आज भी सामाजिक बहस के केंद्र में हैं।

© RESEARCH STREAM JOURNAL, 2024

eISSN 3049-2610
RESEARCH STREAM
A Bi-Annual, Open Access Pear Reviewed International Journal
Volume 01, Issue 02, December 2024

सामाजिक न्याय, जातिगत भेदभाव, दलित अधिकार – ये मुद्दे आज के भारतीय लोकतंत्र में भी गूंज रहे हैं।

प्रेमचंद का साहित्य समय की सीमाओं को पार करता हुआ 'शाश्वत सामाजिक यथार्थ' की तरह पाठकों को आज भी झकझोरता है।

निष्कर्ष

प्रेमचंद के उपन्यास सामाजिक यथार्थ के जीते–जागते दस्तावेज़ हैं। उन्होंने अपने साहित्य में केवल कथा नहीं रची, बल्कि एक ऐसा समाजचित्र प्रस्तुत किया जिसमें हर वर्ग, हर संघर्ष, और हर विडंबना की गूंज सुनाई देती है।

उनका यथार्थ केवल समस्याओं का विवरण नहीं है, बल्कि यह एक ऐसी सामाजिक दृष्टि है जो बदलाव की आकांक्षा रखती है। प्रेमचंद ने साहित्य को सामाजिक परिवर्तन का साधन बनाया और हिंदी उपन्यास को एक नयी ऊँचाई दी।

आज जब हम प्रेमचंद को पढ़ते हैं, तो उनके यथार्थ को केवल ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में नहीं, बल्कि वर्तमान समाज के आईने के रूप में देख सकते हैं। यही उनकी साहित्यिक महानता और प्रासंगिकता का प्रमाण है।

संदर्भ सूची–

प्रेमचंद – गोदान, लोकभारती प्रकाशन

प्रेमचंद – निर्मला, राजपाल एंड संस

प्रेमचंद – सेवासदन, राजपाल एंड संस

प्रेमचंद – गबन, भारतीय ज्ञानपीठ

प्रेमचंद – कर्मभूमि, साहित्य भवन

शुक्ल, नामवर – हिंदी साहित्य की भूमिका, राजकमल प्रकाशन

राय, रामविलास – प्रेमचंद और उनका युग, लोकभारती

चौबे, विश्वनाथ – हिंदी उपन्यास और सामाजिक यथार्थ, साहित्य प्रकाश

पांडेय, रामनरेश – प्रेमचंद का यथार्थवाद, भारतीय साहित्य परिषद

Sharma, R-S- – Social Realism in Indian Fiction, Macmillan India

© RESEARCH STREAM JOURNAL, 2024